अभिनन्दन पत्र

हे राजा जनक, बेगमपुर के बेताज बादशाह, शाहों के शाह, संकल्प शक्ति की शहंशाह यज्ञभूपति, हे शक्ति सेना के अधिपति, सर्विस सम्राट, कर्मेन्द्रिय नरेश, विदेशियों के सुरभूप,परवरदिगार के चश्म–ओ–चिराग,विधाता का वरदान,ब्रह्मा का अरमान, जानीजानन्हार के दिल की जागीर, भारत का अनमोल उपहार, सिन्ध की धरोहर,मधुबन की कोहिनूर,आबू की अमानत,पूना का गौरव, लन्दन की शान, आली उस्ताद, आदि रत्न, आकिल हूर,खूबियों की आफताब, सफलता का अटल सितारा,कुशलता का प्रखर दीप, सिद्धान्तों की पहचान,मर्यादाओं की आरना,अमिट दस्तावेज,गहन साधक,संगठन की मजबूत डोर, विशाल दिल, विविधता के रंग, पुरूषार्थ की पहली उमंग, नवीनता का उत्साही पथ,चिन्तन का खरा अन्दाज,खुशी का सच्चा भावार्थ, ईमानदारी का विश्लेषण,आज्ञाकारिता का सारांश,खुदाई खिदमत का पर्याय,निश्छल प्रेम का प्रारूप,शालीनता का अभिरूप,सच्चाई का सरल रूप, सादगी की प्रतिरूप, निर्मलता का शान्त सन्देश, पवित्रतम परिवेष, अनन्त स्रोत, बहता प्रवाह, खुली किताब, कविता का अर्जमन्द छन्द,मधुरतम राग, पवित्र गंगा, निर्माणता व निरहंकारिता की अद्भुत पराकाष्ठा, अविरल संवाद, इल्म की फाजिल नज्म, श्रीमत की अव्वल तस्वीर, यज्ञ रक्षक,ज्ञान का अखुट भण्डार, शक्तियों की अनुपम जरदार, हर ख्वॉश को सफल करने वाली, रोम–रोम से राम को दिखाने वाली, विश्वकल्याणकारी का टाइटिल साकार करने वाली, साक्षात सरस्वती आदरणीय दादी जानकी जी आपके जन्मशादी महोत्सव पर हम सब उत्तर प्रदेश के भाई बहन आपकी इबारत के आगे नमस्तक हो आपकी इबादत करते है। आपका 330916108 बार अभिवादन एवं अभिनन्दन करते है। आपका शुभ अभिनन्दन अभिनन्दन अभिनन्दन।

जिस काल में नारी को दहलीज के बाहर कदम रखने की अनुमति नहीं उस समय आपने जगत को आध्यात्म का वह सरल पथ दिखा,नारी जीवन की परिभाषा ही बदल दी। आपने अपने सानिध्य से सैकड़ों देशों के लोगों को न सिर्फ परमात्म रंग लगाया बल्कि उनमें त्याग और वैराग्य के बीज प्रस्फुटित कर जीवन जीने का मकसद भी दिया। पुरूषार्थ एवं निश्चय के स्तम्भ पर उर्जावान व्यक्तित्व की इबारत जो आपने लिखी है वह संसार के लिए प्रेरक दर्पण है जो आधुनिकता के लिबास में लिपटे समाज को अन्तर्मन में देवत्व का दर्शन करा रहा है। आपने अपने जीवन के 80 वर्ष प्रभू की महायोजना नवयुग निर्माण की स्वर्णिम इमारत में सीमेंट लगा अपनी स्थिति को ऐसा बेजोड़ बनाया कि परीक्षाओं से भी बुलन्दी का आकाश छू लिया। तपस्या एवं सर्मपण की जो बेमिसाल तस्वीर भौतिक जगत के सामने आपने रखी है वह काबिल–ए–तारीफ ही नहीं बल्कि इबादत योग्य है। लाजवाब खिलाड़ी भी शतकों का शतक लगाकर रिटायर हो गया पर आप नाबाद 138 देशों के साथ कैप्टन बन जिन्दगी के एक सौ एक बसन्त पर भी उर्जा की अनन्त बहार से प्राप्तियों की खुशियॉ बिखेर रही है।

ये गुल्जार–ए–चमन यज्ञ आपकी नेकनीयती एवं अथक साधना की सदा ही कद्र करता रहेगा,और आपकी सेवा भावना को देखकर सदा ही गर्व से सिर ऊँचा करेगा,कि हमारी पनाह में एक ऐसा कोहिनूर निकला जो पूरे अमन तो क्या अखिल ब्रह्माण्ड में जौहरी की चमक बिखेर रहा है। दादी जी ये ब्राह्मण परिवार तो क्या सारा संसार आपकी असीम अनुकम्पा का ऋणी है और सदा ही रहेगा।

आज इस मुबारक अवसर पर हम सभी भाई बहनें भरे भाव से, मुक्त हृदय से बहुत– बहुत तस्लीम के साथ आपका आभार करते हैं। आपके खुदाई खिदमती कद को बाअदब लाखों लाख सलाम करते हैं।उत्तर प्रदेश एवं समस्त ब्राह्मण परिवार की ये दिली ख्वाहिश है कि आप सदा स्वस्थ रहें। हम सबकी दुआयें लम्बी उम्र के रूप में आपको मिले, आपकी पालना सभी के लिए संजीवनी बनकर अपार ऊर्जा का संचार करती रहे। आप यूँ ही दिन दूनी रात सौ गुनी परमात्म प्रत्यक्षता की सफलता के मुकाम हासिल करती रहें। आपको बहुत–बहुत–बहुत बधाई।

तराशा जिसे नूर–ए–इलाही ने,सँवारा जिसे जहान–ए–माली ने,
सँभाला जिसे खुदा की डाली ने,सोचो तो सही,
वो शख्सा कितना काबिले तारीफ होगा।
बेइन्तहा मुहब्बत करे जिनसे विलायत,
विनायक बन सिद्धियों की जिसने लिखी इबारत,
जिनको इश्क सदैव रहा हकीकी,
सचमुच वह बन्दा क्यों न दिल–ए–जागीर होगा।
पुरूषार्थ के करीने में उससे बेहतर कहाँ,
जिसकी हकीकत सारा जहाँ करता है बयाँ,
वक्त की धड़कन की तासीर पकड़ लेती है,
वह बहार–ए–चमन भला क्यों न सबके दिल के करीब होगा।
बड़ी मुद्दत से जिसने मुकद्दर को गढ़ा है,
बड़ी शिद्दत से जिसने सिर्फ खुदा से पढ़ा है,
तहरीर पर जिसकी परवरदिगार की इनायत,
वह नजीर हैं बेशकीमती दादी जानकी।
यह चैतन्य कोहिनूर तो हर शख्सा को चमकाने में लगा है।
वह जड़ कोहिनूर तो बस शीशों की शोभा है।।
ओम शान्ति

ब्र0 कु0 सुमन
जानकीपुरम लखनऊ